सेवा में

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
सृष्टि संवत् 1960853116 विक्रम संवत 2072
डाक पंजीकरण संख्या : RTK/10/2014-16

आर्य प्रतिनिधि

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाषः 01262-216222, Mob. 8901387993
E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य
वर्ष : 12 अंक : 36 रोहतक, 21 फरवरी, 2016 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

आचार्य बलदेव जी : एक महान संत

विशेषांक

अन्त्येष्टि संस्कार पर उमड़ा भारी जनसमूह

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि श्रद्धेय आचार्य श्री बलदेव जी महाराज हमारे बीच नहीं रहे लेकिन उनके द्वारा किये गए कार्यों से हम सब सदैव प्रेरणा और शिक्षा प्राप्त करते रहेंगे। आचार्य जी कहने की बजाय हमेशा कार्य करने में विश्वास रखते थे। आचार्य जी एक महान् गोभक्त थे। जिस समय आचार्य जी ने गोशाला संघ का कार्यभार संभाला उस समय हरियाणा में बहुत कम गोशालाएं थी, जिसके कारण गाय की बहुत दुर्दशा थी। आचार्य जी ने अनेक गोशालाओं का निर्माण करवाया। मैं सन् 1999 में आचार्य जी के संपर्क में आया। उस समय आचार्य जी गुरुकुल कालवा में थे। जानता मैं उन्हें बहुत पहले से था। आचार्य गोसेवक होने के साथ-साथ आचार्य जी एक श्रेष्ठ और आदर्श गुरु भी थे। उन्होंने सैकड़ों नैष्ठिक ब्रह्मचारियों को तैयार किया जो पूरे भारत में आर्यसमाज का डंका बजा रहे हैं। सन् 2003 में आचार्य जी दयानन्दमठ रोहतक आये और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान पद का कार्यभार संभाला और फिर गांव-गांव में घूम-घूम कर आर्यसमाज का प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया। आचार्य प्रतिदिन दो-दो-तीन-तीन गांवों में जाकर प्रचार करते थे। कई-कई गांवों में घूमने के बाद भी कभी हमने आचार्य जी के चेहरे पर थकान नहीं देखी। यह सब उनके ब्रह्मचर्य का प्रताप था। कई बार रात को जब प्रचार से लौटते तो 11 या 12 भी बज जाते थे लेकिन आचार्य जी सुबह तीन बजे उठकर हमेशा अपनी दिनचर्या में लग जाते थे और जो भी लोग मठ में रहते थे उन्हें भी चार बजे ही उठाते थे। अनेक बार मुझे भी आचार्य जी के साथ घूमने का अवसर मिलता रहता था। मुझे सन् 2005 में मना करने पर भी गोशाला संघ का महामंत्री बनाया और मैं उनके आदेश को टाल न सका। उनका जीवन हमेशा संघर्षपूर्ण रहा। आचार्य श्री ने अनेक आन्दोलन किये जैसे 2006 में रामपालदास के दुराचार के खिलाफ सत्याग्रह, संस्कृत बचाओ आन्दोलन, कॉमनवेल्थ खेलों में गोमांस परोसने के विरोध में आंदोलन, गोरक्षा आन्दोलन, 2013 में करौंथा में पापी रामपाल के खिलाफ आन्दोलन। उन्होंने जितने भी आन्दोलन किये सभी में सफलता प्राप्त की।

शेष पृष्ठ दो पर

आचार्य बलदेव जी के पार्थिव शरीर के पास बैठे सभा प्रधान आचार्य विजयपाल जी व अन्य आर्यजन।

पृष्ठ एक का शेष

आचार्य जी ईश्वर के परम भक्त थे। वे कहते रहते थे कि धर्म के कार्यों में लगे रहो परमात्मा अवश्य सफलता प्रदान करेगा। 28 जनवरी 2016 को सुबह आचार्य जी का निधन हो गया। उनके निधन से मानो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के ऊपर मुसीबतों का पहाड़-सा टूट गया। आचार्य जी को आर्यसमाज के अलावा सभी वर्गों में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। इसी कारण उनकी मृत्यु की सूचना मिलते ही हजारों की संख्या में लोग अन्तिम दर्शनों को पहुंचे और नम आंखों से आचार्य जी का अंतिम संस्कार हुआ। आचार्य जी की स्मृति में शान्तियज्ञ में भी हजारों लोग मौजूद रहे।

आचार्य जी के अन्तिम दर्शनों के लिए आर्यसमाज के अलावा लगभग सभी राजनैतिक पार्टियों से भी अनेक महानुभाव पधारे हुए थे। जैसे–आचार्य देवव्रत जी महामहिम राज्यपाल हिमाचल, प्रदेश हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर, शिक्षामंत्री रामबिलास शर्मा, कृषिमंत्री ओमप्रकाश धनखड़, पूर्व मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा, इनेलो पार्टी से अभय सिंह चौटाला, सांसद दुष्यन्त चौटाला, श्री सुभाष बराला भाजपा अध्यक्ष, कैप्टन अभिमन्यु, विधायक मनीष ग्रोवर, योगगुरु बाबा रामदेव आदि। हम हमेशा उनके आदेशों पर चलने का प्रयास करते रहेंगे।

आचार्य जी को शत-शत नमन।

–मा0 रामपाल आर्य, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

पार्थिव शरीर के दर्शानार्थ लगी लम्बी करतारें।

सभा के बलिदान भवन में रखे पार्थिव शरीर एवं दर्शन करते हुए आर्यजन।

उनका जाना

गतांक से आगे....

सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में उपनिषद् के एक संदेश की व्याख्या करते हुए महर्षि दयानन्द लिखते हैं—''जब कभी तुझ को कर्म वा शील तथा उपासना ज्ञान में किसी प्रकार का संशय उत्पन्न हो, तो जो वे समदर्शी पक्षपातरहित योगी अयोगी आर्द्रचित्त धर्म की कामना करने वाले धर्मात्मा जन हों, जैसे वे धर्ममार्ग में वर्तें वैसे तूँ भी उसमें वर्त्ता कर।'' आचार्य बलदेव जी इसी कोटि के महात्मा थे। हमने ऐसे नामधारी महात्मा भी देखे हैं, जो क्रूरता, द्वेष, संकीर्णता से भरे रहते हैं। जब मैं उन्हें प्रथम बार मिला तो वे गांव सिंहपुरा में धर्मप्रचार कर रहे थे। प्रचार समाप्ति पर मैं पैदल वापिस गुरुकुल लौट रहा था। वे अपनी जीप में सवार पीछे से आए और मेरे समीप जीप को रुकवा दिया। जीप में जगह कम रहने पर भी व मेरे मना करने पर भी मुझे बिठा लिया। बैठते ही मुझे कहा—''आपने गुरुकुल को गुरुकुल बना दिया।'' मुझे बड़ी हैरानी हुई कि प्रथम भेंट में ही इन्होंने किसी से सुन मात्र कर ही इतनी बड़ी बात कैसे कह दी? आज के नेता तो कार्यकर्त्ताओं की प्रशंसा करने से बड़े ही झिझकते व सकुचाते हैं। एक तो उन्हें अहं होता है और दूसरा भय। आचार्य बलदेव जी का व्यक्तित्व तप की भट्ठी में तप कर इतना ऊँचा उठ चुका था कि न वहाँ अहं था और न ही भय था। काम करने वाले हर व्यक्ति को मंच पर स्थान देने, बोलने का अवसर देने के लिए वे सदैव चिन्तित रहते थे। जब कभी मेरे जैसा कार्यकर्त्ता मंच पर नहीं बैठता, उस समय भी वे उसे अपने से जोड़े रहते थे। एक ऐसे ही अवसर पर एक वक्ता बड़ा रोचक व्याख्यान दे रहा था, मैं नीचे बैठा सुन रहा था मेरी दृष्टि आचार्य जी पर पड़ी, वे मेरी ओर देखकर मन्द-मन्द मुस्करा रहे थे। भाव जोड़ने का होता था भावना जुड़े रहने की होती थी। उनके पास जो भी फोन करता था, तुरन्त उत्तर मिलता था—''नमस्ते जी।'' आने वाले को जल, भोजन के लिए पूछना कभी न भूलते थे।

आह! आचार्य जी की यह विशेषता उन्हें विद्वानों व तपस्वियों में भी पूज्य बना देती है। वह यह विशेषता कि वे मात्र शील ही नहीं अपितु संघर्षशील थे। सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में मनु के संदेश की व्याख्या करते हुए स्वामी जी लिखते हैं—''जो यमों का सेवन छोड़ के केवल नियमों का सेवन करता है वह उन्नति को नहीं प्राप्त होता किन्तु अधोगति अर्थात् संसार में गिरा रहता है।'' हिंसा को समाप्त किए बिना अहिंसा का प्रकाश, विस्तार कैसे हो और अहिंसा के पालन का औचित्य भी क्या रह जाए? इसी प्रकार सत्य आदि के विषय में समझना चाहिए। सन् 2005 में आर्यसमाज के सामने खुलकर यह बात सामने आई कि रामपालदास ऋषि दयानन्द, सत्यार्थप्रकाश पर विष उगल रहा है। प्रमुख समाचार-पत्रों में भी विज्ञापन के माध्यम से ऐसा कर रहा था। उस समय यदि आचार्य बलदेव का नेतृत्व नहीं होता तो हम जैसे कार्यकर्त्ताओं की तड़प कौन सुनता? अनेक विद्वानों, यतियों को तो यह तड़प व्यर्थ ही लग रही थी। उस समय इस तड़प को आचार्य बलदेव जी का नेतृत्व मिला, नेतृत्व भी ऐसा कि बाद में यह संघर्ष आचार्य बलदेव बनाम रामपालदास बनकर रह गया। इससे सिद्ध होता है कि वे स्वयं में एक संस्था थे, आर्यसमाज का मूर्त्तरूप थे। यम-नियम का पालन करने वाले मनु महाराज द्वारा वर्णित एक आदर्श आचार्य थे। कितना महान् आचार्य मुझ जैसे कितने छोटे व्यक्ति को 'आचार्य' कह गया। हे परमात्मा! यदि असत्य, अविद्या, बुराई के विरुद्ध उनके संघर्ष में हमने सच्चे हृदय से उनका साथ दिया है तो आपसे मेरी प्रार्थना है कि इस मार्ग पर चलते हुए यदि कभी हमारे पग डगमगाएं तो तू हमें संभाल लेना।

अभय आर्य, रोहतक

पार्थिव शरीर को अन्त्येष्टि के लिए ले जाने की तैयारी करते हुए आर्यजन।

आचार्य जी के अन्त्येष्टि संस्कार की झल...

रोहतक, 21 फरवरी, 2016

आचार्य जी के अन्त्येष्टि संस्कार की झलकियां

आचार्य जी के अन्त्येष्टि संस्कार की झलकियां

पूज्य गुरुवर आचार्य बलदेव जी महाराज

मुख्यमंत्री मनोहर लाल एवं बाबा रामदेव चिता को चन्दन की लकड़ी देते हुए।

इस आर्यावर्त भूमि पर प्राचीन काल से ही समय-समय पर ऋषि मुनि तपस्वी, साधु-संत, परोपकारी, समाज सुधारक, राष्ट्रभक्त, गोभक्त, ईश्वर भक्तादि सद् गुणों से युक्त महापुरुष जन्म लेते रहे हैं। जो जन्म लेकर अपने सत्संग के द्वारा भटके हुए लोगों को एक नूतन जीवन देते हैं। इसी श्रृंखला में संत शिरोमणि आचार्य बलदेव जी महाराज का नाम अग्रणी है।

आचार्य बलदेव जी आर्य जगत के मूर्धन्य साधुओं में अद्वितीय थे। आचार्य जी वेद व्याकरण महाभाष्म के अध्ययन करने के पश्चात अपना जीवन समाज, राष्ट्र के निर्माण के लिए प्राचीन शिक्षा व वेदों की रक्षार्थ आर्य समाज के प्रचार प्रसार में लगा दिया। हमारा भी सौभाग्य रहा कि आचार्य जी के साथ गौरक्षा व आर्य समाज के प्रचार प्रसार के लिए कुछ कदम साथ दे सकें। आचार्य जी भूख प्यास की परवाह किए बिना दिन रात रहते थे वे बड़े उत्साही ईश्वर और स्वामी दयानंद के परम-भक्त थे। वे सदा कहा करते थे कि स्वामी दयानंद जी महाराज ने अपना सर्वस्व न्यौदावर करके आर्य समाज की स्थापना की है। इसको बढ़ाने व सुरक्षा की हम सब की जिम्मेदारी है। किसी भी बात को आचार्य जी ने पहले अपने जीवन में उतारते थे फिर दूसरों को संकेत मात्र उपदेश देते थे। आचार्य जी का सम्पूर्ण जीवन वेदानुकुल था वे सदा प्रातः चार बजे से पहले उठकर ईश्वर का ध्यान आदि करके अपनी दिनचर्या शुरू करते थे। रुग्ण अवस्था में भी यही दिन चर्या थी। अंतिम समय 28 जनवरी को भी रात को लगभग 1:30 बजे श्री जयपाल जी के साथ आचार्य जी गुरुकुल से आये धुंध के कारण लगभग चार बजे दयानंद मठ में पहुंचने के पश्चात अपने सेवक को विश्राम करने की कहकर शौचादि करके भ्रमण करने लग गए थे लेकिन किसी को क्या पता था कि यह भ्रमण अंतिम भ्रमण होगा।

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन यातिवंशः समृन्नतिम्।

संसार परिवर्तनशील है जो भी उत्पन्न हुआ है वह ईश्वर व्यवस्था से मृत्यु को अवश्य प्राप्त होता है। यह क्रम अनादि काल से चला आ रहा है। चला रहा है और भविष्य में भी चलता रहेगा। किन्तु जिस महान व्यक्ति के बिछुड़ने से समाज और राष्ट्र की महान क्षति हो जाये ऐसे व्यक्ति का संसार से चले जाना बड़ा दुःखद व अभाव जन्म होता है। ऐसे ही महापुरुषों में परम् पूज्य आचार्य गुरुवर आचार्य बलदेव जी महाराज थे। इनके वियोग से समस्त आर्य जगत, गुरुकुल आर्य संस्थायें, ब्रह्मचारी, सन्यासी आदि अनाथवत् हो गए हैं।

जनवरी में मैं केरल में था। 20-22 जनवरी को मैंने फोन के द्वारा आचार्य बलदेव जी से बात की थी। मैंने उस समय कहा था कि गुरु जी आप केरल में आ जाओ तो उन्होंने कहा कि 28 जनवरी के बाद बताऊंगा, लेकिन 28 जनवरी को सुबह 5 बजे आचार्य योगेंद्र ने मुझे फोन पर कहा कि आप जल्दी वापिस रोहतक आ जाओ। गुरु जी गिर गए और चोट लग गई। उनकी सेवा में आना पड़ेगा। मैंने तुरंत हाँ कर दी और तत्काल हवाई जहाज के माध्यम से आने की तैयारी शुरू कर दी थी। क्योंकि पूज्य आचार्य जी की मुझ पर विशेष कृपा थी। वे मुझे भी अपने पास रखकर खुश रहते थे और मुझे बड़ा आनंद आता था, क्योंकि वे मैं अपना जीवन आचार्य जी को समर्पित कर चुका था। जिस समय मैं पढ़ता था, उस समय से ही आचार्य जी घर पर आते जाते थे, परंतु एक दिन दयानंद मठ में आचार्य जी से आर्ष विद्या पढ़ने व नैष्ठिक ब्रह्मचारी बनने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि राजा बन प्रजा तो सारी दुनिया है ही। 11 अगस्त 2006 को मुझे पढ़ने के लिए अजमेर भेजा। उसके पश्चात 2011 से अपने पास रखकर गौशाला संघ व गौरक्षा का कार्य सौंपकर आशीर्वाद दिया था, परंतु आचार्य योगेंद्र जी का साढ़े 6:30 बजे फोन आया कि आचार्य जी सदा के लिए हमें छोड़कर चले गए हैं। यह बात सुनते ही मेरा शरीर सुन सा हो गया तब लगा कि हम अनाथ हो गये, क्योंकि जब भी कहीं से आते तो आते ही पूरे कार्य की सूचना लेते। मार्गदर्शन करते रहते थे। कोई सम्मेलन या आंदोलन करते तो बाधाओं से निपटने से प्रेरणा देते थे। आर्य समाज के स्तंभ थे उनका जीवन त्याग एवं पवित्रता से परिपूर्ण था। उन्होंने अपने जीवन में कभी हिम्मत नहीं हारी, जिस भी कार्य को करते थे बड़ी सूझबूझ से करते थे। आचार्य जी सत्य की रक्षा के लिए हमेशा आगे रहते हुए मर मिटने को तैयार रहते थे। चाहे गौरक्षा के लिए मेवात व गुड़गांव आदि स्वामी दयानंद विरोधी व वेद निंदक स्वामी रामपाल दास के खिलाफ आंदोलन करके सरकार को भी झुका दिया। कभी पीछे हटे नहीं। आचार्य जी ने कभी अपने विरोधियों का अहित नहीं चाहा। सबकी भलाई व सबका उपकार चाहा। सन्यासी व ब्रह्मचारियों के लिए आचार्य जी अपना सब कुछ लगा दिया। आचार्य जी 150 ब्रह्मचारी, विद्वान, आचार्य, सन्यासियों के प्रेरणा स्त्रोत रहे।

आचार्य सर्वमित्र आर्य, रोहतक

अन्त्येष्टि संस्कार के समय का दृश्य।

अन्त्येष्टि स्थल पर पहुंचे राजनेता, सन्यासी, वैदिक विद्वान, सामाजिक तथा धार्मिक संगठनों के प्रबुद्ध व्यक्ति

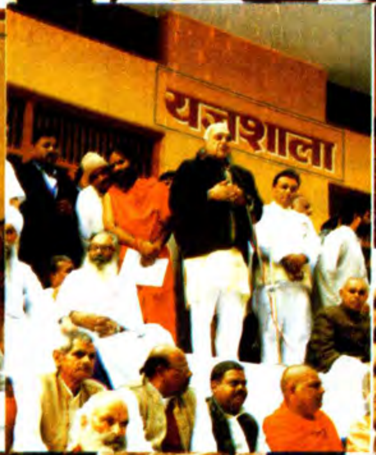

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक मा0 रामपाल आर्य ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।